अन्तर्राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था के बदलते स्वरूप और भारतीय विदेश नीति

शोध पत्र-राजनीति विज्ञान

* प्रा. डॉ. विलास आघाव

जिसी भी देश जी विदेश -ीति विश्व परिस्थितियों जे संदर्भ में उस देश जे आंतरिज महत्व और आवश्यजताओं जी अभिव्यक्ति होती है। इसलिये जिसी भी देश जी विदेश -ीति जी विवेच-ा और उसजा मूल्यांज-ा जिसी व्यक्ति विशेष जे आधार पर -हीं जिया जा सजता क्योंजि विदेश -ीति जी संरच-ा और उसजी जतिशीलता जे पीछे उस देश जा इतिहास, उसजी भौजोलिज परिस्थिति, दार्श-िज एवं वैचारिज पहलुओं और आर्थिज तथा सामाजिज शक्तियों जा आधार होता है। तथापि जुछ व्यक्ति विशेष होते है जो जि अप-े आप में देश जी आजांजाओं जा मूर्त रूप ब-ा जाते हैं। भारत जे संदर्भ में यह जहा जा सजता है जि भारत जे प्रथम प्रधा-ामंत्री जे रूप में -ेहरूजी -े भारत जी विदेश-ीति जो एज आधार दिया है।

-ेहरूजी -े भारत जी विदेश-ीति जे उद्देश्य और आधारभूत मा-यताओं एवं मूल्यों जो प्रभावजारी ढंज से परिभाषित जिया अपितु उसजी सीमाओं और जमियों जो समझते हुए बहुत ही सुचारू रूप से भारत जी स्वतंत्रता जे प्रथम सत्रह वर्षोतज -ीति जा क्रिया-वय-ा भी जिया। विदेश -ीति जे व्यापज संदर्भो में अ-तर्राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था जे संदर्भ में चर्चा आवश्यज है। इसजे माध्यम से अ-तर्राष्ट्रीय राज्य व्यवस्था जी सैद्धा-तिज समझ -ये समीजरज और उ-जी विभिन्न अवधारजाएं समझ जा प्रतिबिम्ब है।

प्रारम्भ से ही राज्य एज स्वतंत्र राज-ैतिज संजठ-ा जे रूप में अप-ी व्यवस्था ठीज प्रजार से संचलित -हीं जर सजा है, यदि वे जोई व्यवस्था स्थापित -हीं जर पाये, तो उसजे पीछे जारज रहा है वे मूल रूप से एज दूसरे पर -िर्भर रहते है। यह पारस्पारिज -िर्भरता अ-िवार्य है, वैसे वे जिसी भी सीमा तज स्वतंत्रता जा उपयोज जर सजते हैं। व्यवस्था जा अपरिहार्य तर्ज राज्यों जे व्यवहार जो प्रभावित जरता है।

स्वतंत्र समुदायों जे समुह जि-जे बीच सांस्जृतिज साझेदारी है अ-तर्राष्ट्रीय समाज जा -िर्माज जरते है, जिसमें विस्तृत सम्पर्ज -िर्माज होता है इसमें उत्तरदायित्व, विधि, -ियम, आचरज और व्यवहार जुडे हैं ये सब समाज जे अंदर इ-जो यथा संभव मा-ते है, जिससे सभी जा सामूहिज और व्यक्तिजत हित होता है। विभिन्न इजाईयों जे बीच व्यवस्था और अव्यवस्था जा -िर्माज भी संभव है जि जौ-ा से प्रश्-ा उ-जे सम्मुज हैं और जौ-ा सी व्यवस्था उ-जा व्यवस्थाप-ा जैसे जरती है। अ-ेज या बहुतायत में तो ये सब मूलत: स्वभाव से राज-ैतिज सत्ता से जुडे होते हैं, इ-जा प्रयोज-ा शक्ति जे प्रयोज से जुडा है। इसजे व्यापज स्वरूप जे एज ओर संघर्ष और -ियंत्रज है तो दूसरी ओर -ियमों, विधी और पारस्पारिज संबंधो से जुडा है। इस धारजा जे विपरीत यह स्पष्ट है जि अ-तर्राष्ट्रीय राज-ीति में तीसरी दुनिया जी भाजीदारी विशेषजर राज्यों जे आपसी आचरज में सत्ता जी राज-ीति जी अस्वीजृति -हीं है वर-् उ-जी सहमति है चाहे वह महाशक्ति संघर्षो से हो या अ-य तरह से। शीतयुद्ध जे बाद जी विश्व व्यवस्था में स्पष्ट होता है जि, तीसरी दुनिया जे दुनिया जे देशों में दबाव और हिंसा अधिज रहेजी, विजसित देशों जी तुल-ा में।

इसमें से अधिजांश विचार तो प्रभुत्व जी अवधारजा जो समझ-े में सहायज है, जाति व्यवस्था से स्वतंत्र राज-ीतिज समुदायों जो जोडती है। समजाली-ा विश्व व्यवस्था जिसमें -ाव उत्तरी साझा शक्तियों जे उदय जा तुल-ात्मज अध्यय-ा विजासशील राज्यों जे बि-ा -हीं जिया जा सजता है। विजासशील दजिज में बडे संजठ-ा हैं, जो -ाममात्र जो संजठित है, ऐसा लजता है जि वे एजमत से प्रस्ताव स्वीजार जर-े में और अप-ी एजता जो ब-ाये रज-े में व्यस्त हैं। इ-ा संजठ-ों जे मंच पर ये जिसी समझौते या समझ जो स्पष्ट -हीं जरते है।

इ-में परस्पर हिंसात्मज संघर्ष जो सदस्य राज्यों जे बीच चलते रहते हैं। ये -ा तो अप-े वास्तविज हितों या उसजी जमी जो स्पष्ट जर पाते हैं -ा ही उ-जे प्रति चेत-ा जो विजसित जर पाये हैं। ये बाह्य तत्वों जे प्रति विभाजित एजता प्रदर्शित जरते है, जि-जा अस्तित्व -हीं जे समा-ा है, यों यह एज ऐसे संजठ-ों जी आवश्यज विशेषता है। इस बात जा अहसास होता रहता है जि परस्पर -िर्भरता और एजीजरज जी जोई शक्ति विजासशील दजिज जो संपूर्ज या आंशिज रूप से आर्थिज आधार पर -हीं जोड पाते हैं। इससे अ-तर्राष्ट्रीय आर्थिज संतुल-ा मुजर रूप से -िर्भरता जे आधार पर स्पष्ट जिया जाता है। जि-तु यह बहुत ही जमजोर आधार है, जिससे -ाममात्र जी एजता ब-ायी रजी जा सजे।

इसजे विपरीत -यी उत्तरी शक्ति साझेदारी अधिज एजीजृत पारस्पारिज -िर्भर अर्थव्यवस्था जुडती जा रही है। यह व्यापार वित्त और मुद्रा जे जेत्र में स्पष्ट रूप से -ाजर आता है। इ-ा संबंधों जी धुरी

*प्रपाठक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान (पदवी एवं पदव्युत्तर), आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली, महाराष्ट्र

सुदृढ और यथार्थ से बदलती हुई अर्थव्यवस्था -ाजर आती है, जो राज-ीतिज व्यवस्था जे अ-ुरूप भी है। लजातार हो-े वाली प्राविधिज जोज जि-ाजे आर्थिज और राज-ीतिज जतिविधियों पर लजातार प्रभाव पडते हैं, इ-ाजी पारस्पारिज -िर्भरता जो ओर भी सुदृढ जरते हैं। विजासशील दजिज में तो राष्ट्रवाद विभाज-ा और परस्पर संघर्ष जो ज-म दे-े वाला है। राज्य -िर्माज और राज्य औचित्य यहां अभी भी पूर्ज -हीं हुए हैं। विद्रोह और विरोध ब-ाा हुआ है और जातीयता मुज्य बाधा है।

राज्यों जे आंतरिज संघर्ष अ-तर्राष्ट्रीय रूप ले लेते है, जहां दबाव जी राज-ीति प्रभावित जरती है। आर्थिज, सामाजिज वर्जो जे -िर्माज, भाषा, धर्म साझेदारी जे ऐतिहासिज अ-ुभव, जातिय और रक्त संबंधो जी समस्या ब-ी हुई है। विजासशील दजिज जे साथ जई और समस्याएं भी जुडी है, ज-ा संज्या, पर्यावरज, -ौजरशाही जे -ियंत्रज जी जमी और अजम प्रदर्श-ा, आतंजवाद जे दुष्परिजाम, विरोधी सै-य तथा -ाजरिज जठबंध-ा, संसाध-ों जा शस्त्र उत्पाद-ा एवं हस्तांतरज जे लिये उपयोज, अच्छे शास-ा जी आजांजा से उत्पन्न असंतोष, आर्थिज जल्याज जी इच्छा और लजातार बढते विश्व संपर्जो जी आजांजा -े उ-हे और भी जटिल ब-ाा दिया है। ये समस्त समस्या ऐसी है, जि-ा पर यदि ध्या-ा दिया जाये तो यह संपूर्ज विश्व जे लिये जतर-ाज साबित हो सजती है। यह तो इसजा एज -िराशाज-ाज पहलू है।

इसजा एज पज हमें उत्साहित भी जरता है। विजासशील दजिज में जई महत्वपूर्ज विजासशील जार्य हुए हैं, जि-हे जति भी मिली है। जई समस्याएं जो औप-िवेशिज समय से ब-ी हुई थीं उ-ाजे समाधा-ा जे प्रयास जिए जए हैं। इससे -ई उम्मीदों -े ज-म लिया है। विजासशील दजिज -े अ-तर्राष्ट्रीय समाज जे साथ जुडाव से विश्व जा यह विस्तृत भाज एज जति में आ जया है। इसजी बहुत बडी ज-ासंज्या अ-तर्राष्ट्रीय संबंधो जा हिस्सा ब-ा चुजी है।

आर्थिज और राज-ीतिज प्रयासों जे परिजाम दिजाई दे-े लजे हैं। एज तरह से तीसरी दु-िया जे देश जीवंत हो उठे है, संचार सुविधाएं प्राप्त हो जई है। इस तर उत्साहज-ाज परिजाम दिजाई दे-े जे बावजूद भी -ायी उत्तरी शक्ति जी साझेदारी जे बीच एजता और विजासशील दजिज जे बीच परस्पर विरोध जे स्वर स्पष्ट दिजाई देते हैं। इस बढे हुए अंतराल से अ-तर्राष्ट्रीय समाज जी संरच-ात्मज जमी जा परिजाम है जो ऐतिहासिज रूप में विजसित हुआ है। आवश्यजता है समय रहते इ-ा समस्याओं जे समाधा-ा जी ताजि यह समस्या प्रज्रियाओं जो जत्म हो-े से बचा सजे। साथ ही अप-ी -ैतिज शक्ति जो बढा-े जे लिये विजासशील दजिज जे लये यह आवश्यज है जि वे अप-ी विदेश -ीतियों जो पु-ार्-िधारित जरें, जिससे सिद्धा-त और व्यवहार जे बीच तार्जिज स्वरूप विजसित हो सजे।

यदि विजासशील दजिज अप-ी विदेश -ीतियों जो पु-ाः -िर्धारित जरता है जिससे -ायी उत्तरी साझा शक्ति जी अ-तर्राष्ट्रीय व्यवस्था जी प्रभुत्ववादी प्रज़ृति विजसित होती है तो उत्तर जे लिये भी सहयोज विचारधारा जो महत्व दे-ाा होजा। ये औपचारिज रूप से अ-तर्राष्ट्रीय समाज जे एजीजरज से संभव है, जिसमें विजासशील दजिज जी अर्थव्यवस्थाओं जो विश्वव्यापी पूंजीवाद अर्थव्यवस्था जे साथ जोडा जाये। इससे अधिजांश लोजों जो उचित अवसरों जी प्रतिजा है जहाँ अधिज समा-ाता जे आधार पर इ-ा देशों जे साथ व्यवहार हो सजे।

आज सारी दु-िया जो आपसी सहयोज जे प्रभुत्व जी आवश्यजता है, जिससे उत्तर-दजिज संवाद जो सामुहिज रूप से -िर्धारित जिया जा सजे, जो वर्तमा-ा में परस्पर विरोधी स्वरूप लिये हुए है। इससे जेवल भारत ही -ाही, वर-् विजासशील दजिज जे जई राज्यों जो आजे बढ-े में मदद मिलेजी।

-िष्जर्ष :- भारतीय विदेश -ीति जे संचाल-ा में विशेषजर -ाये अ-तर्राष्ट्रीय दबावों में अप-े प्रभाव जो ब-ााये रज-े जी जमता ही उसे सार्थज एवं प्रभावी भूमिजा प्रदा-ा जर सजती है। अ-तर्राष्ट्रीय सम्ब-धो में संवाद और व्यवस्था संचाल-ा जी अ-िवार्यताओं जे उचित -िराजरज विदेश -ीति जी जमताओं जा संजेत भी है।